राज्याभिषेक की तैयारी

राजा का पुत्र हूँ, लायक हूँ, उसके आधार से आगे की राजगद्दी हमें मिलेगी। लेकिन उसके लिए हमारे या आपके अंदर बहुत सारे राजाई गुण होने ही चाहिए। अगर हैं, तो कामयाब तरीके से हम राजाई चला सकते हैं। लेकिन उसकी पूर्व तैयारी भी तो चाहिए...!

जब राजा रामचन्द्र जी ने रावण पर विजय प्राप्त कर अयोध्या की ओर प्रस्थान किया था, उस समय उनके आगमन की खुशी में पूरे नगर को रोशनी से भर दिया गया था, अर्थात् हर जगह दीपक शोभायमान थे, हर कोई इस बात को लेकर आतुर था कि यह उत्सव का दिन है, जिसमें विजय मिली है। लेकिन विजय किसकी, किस पर? यह कोई जातक कथा या किवदन्ती या फिर बनी बनायी कहानी भर हो सकती है!

रामकथा में यह वर्णन भी आता है कि सभी नगरवासी एक-एक को बधाई देते भी नज़र आते, कहते कि खुशियों के दीप जलाओ कि राजा राम विजय पताका फहरा अब अयोध्या नगरी तरफ बढ़ रहे हैं।

कुछ भी हो, लेकिन इसका कुछ तो भावार्थ होगा ही! क्योंकि तुलसीदास जी ने कोई भी बात ऐसे ही तो नहीं कह दी होगी! उन्होंने उसे मानसिक रूप से तैयार भी किया, उससे हर मानव को शिक्षा भी दी। आत्मा राम जब अपने विकारों के वश हुई, अर्थात् रावण के वश हुई, तो उसने अपनी सारी शक्ति खो दी। शक्ति प्राप्त करने हेतु उसे पुनः शिव परमात्मा के साथ जुड़ना पड़ा। उससे शक्ति प्राप्त कर रावण का विनाश किया, ऐसा दिखाया जाता है। सोचो आप, आत्मा कितनी न कमज़ोर होगी, कि उसे माया को हराना इतना आसान नहीं रहा!

यहां पर बात चल रही है, कई बार हम जीत भी जाते, लेकिन फिर माया या रावण खुल के सामने आ जाता। इसी का यादगार वहां दिखाया जाता है, कि जब राम तीर चलाते, रावण का सिर कट जाता और पुनः आ जाता। फिर राम को याद दिलाने के लिए किसी विभीषण की ज़रूरत पड़ी।

विभीषण को सभी नकारात्मक भूमिका में ही देखते आए कि उसने घर का भेद किसी और को बता दिया। लेकिन आप सोचिए, जो व्यक्ति अधर्मी हो, उसका साथ देना कहाँ का न्याय है! इसलिए वहाँ पर चरित्र रूप से उन्होंने विश्व कल्याण, लोक कल्याण, जन कल्याण हेतु भगवान की शरण ली तथा उसमें सहयोग दिया। तो हमें भी रावण या माया पर जीत दिलाने के लिए विभीषण की भूमिका निभानी पड़ेगी। तभी तो रावण जड़ से नष्ट होगा, अन्यथा तो वो कभी मरने वाला नहीं। अगर हमें निरन्तर जागना हो, तो जगाना भी होगा, यही जागना अर्थात् जो जागा हुआ है, वही तो रावण को मार, अपनी ज्योति जगायेगा अथवा अपने को जागति ज्योत बनायेगा।

आज हर किसी को इसी जागति ज्योत की तरह बनना पड़ेगा। तभी तो दिवाली घर घर में होगी। लेकिन उसके बाद जो राज्याभिषेक होगा, वह भी देखने वाला होगा। राजा रामचन्द्र जी भी एक उदाहरण के रूप में ही तो हैं, जिनका राज्याभिषेक भी हुआ, लेकिन रावण को जीतने के बाद। इसी को राजतिलक या भैया दूज कहा जाता है। यह कथा मानसिक आधार से तैयार की गई है। आप सोचिए, अगर आप भी इसी की तैयारी में लग जाएं, तो राज्याभिषेक होगा ही होगा। वो भी बड़े धूमधाम से।

आपका जीवन किस पत्ते की तरह

एक समय की बात है गंगा नदी के किनारे पीपल का एक पेड़ था। पहाड़ों से उतरती गंगा पूरे वेग से बह रही थी कि अचानक पेड़ से दो पत्ते नदी में आ गिरे। एक पत्ता आड़ा गिरा और एक पत्ता सीधा। जो आड़ा गिरा वो अड़ गया, कहने लगा, आज चाहे जो हो जाए मैं इस नदी को रोक कर ही रहूंगा। चाहे मेरी जान ही क्यों न चली जाए मैं इसे आगे नहीं बढ़ने दूंगा।

वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा - रुक जा गंगा, अब तू और आगे नहीं बढ़ सकती, मैं तुझे यहीं रोक दूंगा! पर नदी तो बढ़ती ही जा रही थी, उसे तो पता भी नहीं था कि कोई पत्ता उसे रोकने की कोशिश कर रहा है, पर पत्ते की तो जान पर बन आई थी। वो लगातार संघर्ष कर रहा था, नहीं जानता था कि बिना लड़े भी वहीं पहुंचेगा जहाँ लड़कर, थककर, हारकर पहुंचेगा! पर अब और तब के बीच का समय उसकी पीड़ा का, उसके संताप का काल बन जाएगा।

वहीं दूसरा पत्ता जो सीधा गिरा था, वह तो नदी के प्रवाह के साथ ही बड़े मज़े से बहता जा रहा था। यह कहता हुआ कि चल गंगा, आज मैं तुझे तेरे गंतव्य तक पहुँचा कर ही दम लूंगा, चाहे जो हो जाए मैं तेरे मार्ग में कोई अवरोध नहीं आने दूंगा, तुझे सागर तक पहुंचा ही दूंगा।

नदी को इस पत्ते का भी कुछ पता नहीं, वह तो अपनी ही धुन में सागर की ओर बढ़ती जा रही है, पर पत्ता तो आनंदित है, वह तो यही समझ रहा है कि वही नदी को अपने साथ बहाए ले जा रहा है। आड़े पत्ते की तरह सीधा पत्ता भी नहीं जानता था कि चाहे वो नदी का साथ दे या नहीं, नदी तो वहीं पहुंचेगी जहाँ उसे पहुंचना है! पर अब और तब के बीच का समय उसके सुख का, उसके आनंद का काल बन जाएगा।

जो पत्ता नदी से लड़ रहा है उसे रोक रहा है, उसकी जीत का कोई उपाय संभव नहीं है और जो पत्ता नदी को बहाए जा रहा है, उसकी हार का कोई उपाय संभव नहीं है। जीवन भी उस नदी के समान है जिसमें सुख और दुःख की तेज़ धारायें बहती रहती हैं और जो कोई जीवन की इस धारा को आड़े पत्ते की तरह रोकने का प्रयास करता है तो वह मूर्ख है, क्योंकि ना तो कभी जीवन किसी के लिए रुका है और ना ही रुक सकता है। वह अज्ञान में है जो आड़े पत्ते की तरह जीवन की इस बहती नदी में सुख की धारा ठहराने या दुःख की धारा को जल्दी बहाने की मूर्खतापूर्ण कोशिश करता है। क्योंकि सुख की धारा जितने दिन बहनी है उतने दिन तक ही बहेगी, आप उसे बढ़ा नहीं सकते और अगर आपके जीवन में दुःख का बहाव जितने समय तक के लिए आना है, वो आकर ही रहेगा, फिर क्यों आड़े पत्ते की तरह इसे रोकने की फिजूल मेहनत करना।

बल्कि जीवन में आने वाली हर अच्छी बुरी परिस्थितियों में खुश होकर जीवन की बहती धारा के साथ उस सीधे पत्ते की तरह ऐसे चलते जाओ जैसे जीवन आपको नहीं, बल्कि आप जीवन को चला रहे हो। सीधे पत्ते की तरह सुख और दुःख में समता और आनन्दित होकर जीवन की धारा में मौज से बहते जाएँ। और जब जीवन में ऐसी सहजता से चलना सीख गए तो फिर सुख क्या और दुःख क्या! जीवन के बहाव में ऐसे ना बहो कि थककर हार भी जाओ और अंत तक जीवन आपके लिए एक पहेली बन जाये, बल्कि जीवन के बहाव को हँस कर ऐसे बहाते जाओ कि अंत तक आप जीवन के लिए पहेली बन जायें।

दिल्ली-करोल बाग(पाण्डव भवन)। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया के जस्टिस मदन बी. लोकुर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा तथा ब्र.कु. सविता।

आगरा-नवपुरा(उ.प्र.)। विधायक जीतेन्द्र वर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शशि।

पठानकोट-पंजाब। एस.के. पुंज,लायन इंटरनेशनल डिस्ट्रीक्ट गवर्नर व सांई ग्रुप ऑफ इंजीनियरिंग तथा एस.डी. तृप्ता को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सत्या।

गोण्डा-उ.प्र.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् सी.एम.ओ. वी.पी. सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दिव्या।

शिवाजी नगर-किशनगढ़(राज.)। सिलोरा थाने में पुलिस अधिकारी बंसी लाल तथा अन्य अधिकारियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् प्रसाद देते हुए ब्र.कु. शांति तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

चित्तौड़गढ़-राज.। जिला जेल में अधिकारियों एवं कैदी भाइयों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बिनीता तथा ब्र.कु. बहनें।

सासाराम-बिहार। जिलाधिकारी पंकज दीक्षित को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबिता तथा ब्र.कु. नीतू।

दिल्ली-सीताराम बाज़ार। एडिशनल डी.सी.पी. अमित शर्मा को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता। साथ हैं ब्र.कु.संगीता।

जमशेदपुर-झारखण्ड। डी.सी. अमित कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. संजू, ब्र.कु. खुशबू तथा अन्य।

बद्दी -हि.प्र.। बी.बी.एन.डी.ए. के सी.ई.ओ. के. सी.चमन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शकुन्तला।

जयपुर-सोडाला। अभिनेत्री शशी शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम।

नेपाल-गौर। नगरपालिका की उप मेयर किरण ठाकुर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. जमुना।